एक अपरिभाषित परिचय

उन दिनो सोवियत यूनियन मे दो भारतीय नाम बेहद मशहूर थे. जवाहर लाल और राज कपूर के। इनके नाम वहॉ ऐसे ही उच्चारित होते थे। राज कपूर की ऐसी कोई फिल्म न थी. जो रसियन मे डब न की गई हो। अवारा हूँ आसमान का तारा हूँ के शब्द व धुन तो कईयों को जुबानी याद थी। ये गाना मै एक बार मलदाविया के एक लागर मे गाया था. जहॉ हम छ सप्ताह की छुट्टियों मे गए थे। हमे एक कालखोज अर्थात खलिहान मे ठहराया गया था।
एक बहुत बड़े अहाते मे न जाने कितने बड़े बड़े कमरे थे। मै जिस कमरे मे था. उसमे किसी अस्पताल के आठ पुराने बेडस लगे हुए थे। मेरे अलावे इस कमरे मे दो इन्डियन्स और बाकी अफगानिस्तान के लड़के थे। इन अफगानियो मे एक का नाम असरफ था। वो कई वर्षो तक बम्बई मे रह चुका था और हिन्दी बिना किसी रूकावट के बोल लेता था। लागर के अहाते मे एक बास्केट बॉल का मैदान था. जहॉ रोज ही शाम को लैटिन अमेरिका के लड़के डिस्को का इन्तजाम करते थे। आस पड़ोस की लड़कियॉ वहॉ जत्थे बनाकर आती थीं। सात बजे शाम से लेकर सुबह तक आबा और बोनियम के जन्गली गाने फूल वाल्यूम मे बजते थे। दरअसल इस पूरे डिस्को का मात्र एक ही ध्येय होता था. लड़कियॉ फॅसाना। मै भी कभीं कभीं वहॉ जाता था और एक बेन्च पर बैठ कर वहॉ की सारी गतिविधियॉ देखता था। उन दिनो और आज भी मुझे इस तरह के नाच गानों मे कोई दिलचस्पी नही है। ये सब कुछ मेरे लिए नितान्त अपरिचित था और बना रहा।
कालखोज के सारे कमरे जर्जर हो चले थे. पलस्तर तक झडे हुए थे. फिर भी सफाई हर जगह थी। हमारे विस्तर बड़े साफ सूथरे होते थे। मलदाविया का खाना भी अपेक्षाकृत बुरा न था। सुबह के नाश्ते के बाद ट्रकों से हमे अलग अलग जगहों पर ले जाया जाता था। इस लागर का नाम त्रूद इ अद्दीखा था यानि मेहनत और आराम। मेहनत के नाम पर हमे बड़े बड़े बागों मे जाकर पेंड़ो से सेव तोड़ने पड़ते थे। मै पूरे समय किसी एक पेंड़ की एक ऊॅची सी डाल पर बैठा रहता था। किसी को आते देखकर एकाध सेव तोड़कर नीचे गिरा देता था। दोपहर के खाने के बाद हम स्वतंत्र होते थे। मेरे कमरे मे ताशें खेली जाती थी। बास्केट बॉल. फूटबॉल. बैडमिन्टन. शतरंज आदि खेलों का भी पूरा प्रबन्ध था। फिर भी मुझे अक्सर ऐसा लगता था. जैसे मै किसी जंगल मे आ गया हूँ. जहॉ मेरा कुछ भी जाना पहचाना नही है। मै प्रायः अकेला ही रहता था। लागर का कोई भी आकर्षण मुझे वहॉ बॉध नही पाता था। लागर से बाहर जाना हमारे लिए प्रतिबंधित था. जिसे मैने कभी नही माना। दोपहर के खाने के बाद मै रोज ही लागर से बाहर घूमने निकल जाता था। लागर के ठीक सामने एक बड़ा सा मैदान था. जहॉ आसपास के गॉवो के लड़के फूटबॉल खेला करते थे। लागर से एक संकरी पर पक्की सड़क एक चौक तक जाती थी. जहॉ एक सिनेमा हॉल और एक डिस्को था। इनके अलावे वहॉ एक पोस्ट ऑफिस. दस बारह दुकाने और लकड़ी की एक छोटी सी गुमटी थी. जहॉ हर घन्टे एक टूटी फूटी बस आकर रूकती थी। यातायात के नाम पर यही एक बस थी. जो आसपास के तमाम गॉवों को जोड़ती थी।
एक दिन समीप के ही एक गॉव मे मेरा परिचय एक औरत से हुआ जो अपने बगान मे काम कर रही थी और मै उसे उसके बाड़े से बाहर खड़ा उसे काम करते देख रहा था। अचानक उसकी नज़र मुझ पर पड़ी। वो समीप आई। परिचय होने के बाद उसने मुझे बाड़े के अन्दर आने का न्योता दिया। शाम के यही कोई चार पॉच बज रहे होंगे। इस थोड़ी सी जमीन मे सेव. नासपाती. और अखरोट के दस बारह पेंड़ फलों से लदे पड़े थे। बगान के एक छोर पर बड़े करीने से बनाई गई क्यारियों मे तरह तरह के सलाद. प्याज. लहसुन. मिर्च. आलू. टमाटर. खीरा आदि सब्जियॉ लहलहा रही थीं। तरह तरह के मौसमी फूलों के बीच एक छोटा सा हरा भरा लॉन था. जहॉ बैठने के लिये स्वयम की बनाई दो बेंचे और एक टेबल भी था। दॉयीं तरफ काफी ऊॅचाई पर बना लकड़ी का एक बड़ा भव्य सा घर था। एक कोने मे एक छोटी सी झोंपड़ी थी. जहॉ तार की जालियों से घिरा दरबा था। दरबे मे पच्चास से भी ज्यादे मुर्गे मुर्गियॉ थीं। इस झोपड़ी के नीचे एक तहखाना था. जहॉ लकड़ी के बड़े बड़े पीपों मे कई तरह की वाइने पड़ी थीं। झोपड़ी की सारी दीवारों पर तरह तरह के औजार लटक रहे थे।
शाम का खाना मै वहीं खाया। खाने पर मुझे घर की ही बनी डबल रोटी. मक्खन. सलाद और लकड़ी की आग पर भूनी मसालेदार मुर्गी और पीने को एक मीठी सी वाइन मिली। खाना खाने के बाद हम घन्टों बैठे गप्पें मारते रहे।
उसका नाम लुदमीला था। वो पोस्ट ऑफिस मे काम करती थी। उसकी उम्र चालीस वर्ष की थी। पता नही किस वजह से उसने शादी न की थी! ये घर और बगान उसे अपने मॉ बाप से मिले थे। उसका कोई नजदीकी रिश्तेदार भी न था। दूर दराज के रिश्तेदार आसपास के गॉवों मे बिखरे पड़े थे। उसी से मुझे पता चला कि हमारे लागर के लड़कों को आसपास के गॉवों मे बड़ी घृणा से देखा जाता है। कई लड़कियों के तो गर्भ तक ठहर गए थे। हर वर्ष यहॉ नये लड़के आते हैं. इधर उधर का वायदा कर के हमारी लड़कियॉ खराब कर जाते हैं। पश्चिमी देशों के गाने लड़कियों को घर मे टिकने ही नही देते। हमारे अपने गाने इन्हे उबाऊ लगते हैं। इन्ही के भाई बन्धु. जिन्हे तुम हूलीगन कहते हो. मिल जाने पर लागर के लड़कों को पीट पाट देते हैं। अब मुझे लागर से बाहर निकलने के प्रतिबन्ध की कहानी समझ मे आई. मै लुदमीला की बातों मे खोया रहा। न तो मुझे समय का ख्याल रहा न अपने पीने का। मेरा अकेले लागर वापस लौटना सम्भव न था। मै उसके पास ठहर नही सकता था। लुदमीला अपने घर के अन्दर से एक बड़ा सा टार्च लाई. अपना दॉया हॉथ मेरे बॉये हॉथ मे फॅसाई और मुझे लागर तक छोड़ गई। रास्ते भर वो मुझसे कुछ कहती रही. मै हूँ हॉ करता रहा और पूरे रास्ते बस कहीं गिर कर सो जाने की ज़िद. करता रहा। मै कैसे और किस तरह अपने विस्तर तक पहुॅचा. मुझे आज तक याद नही है। शराब मे एक खाशियत है वो हमे अपने चंगुल से छोड़ना ही नही चाहती। घन्टो वो हमे अपने इशारों पर नचाती है और फिर हम कई दिनों तक अपने नाच के इर्द गिर्द नाचते रहते हैं।
लुदमीला के पास मै रोज ही ठीक चार बजे पहुॅच जाता था। मै उससे बड़ी जल्दी घुल मिल गया। मै बिना किसी झिझक के उसके घर के सारे कमरो मे भी जाने लगा। वाइन की जग मै अकेले ही उसके तहखाने से भर लाता था। मै उसे अब तुम कहकर पुकारने लगा था। वो मेरे किसी बात का बुरा नही मानती थी। रोज ही रात के बारह बज जाते थे। वो मुझे लागर तक छोड़ आती थी। पूरे गॉव मे उसकी इतनी प्रतिष्ठा थी कि कभीं किसी ने भी हमारे मिलने जुलने पर ऊॅगली न उठाईएक बार हमे एक दूसरे लागर का निमंत्रण मिला। इस लागर मे दूर दूर के बच्चे अपनी गर्मी की छुट्टियॉ मनाने आए हुए थे। उनके देखभाल के लिए अलग अलग यूनिवर्सिटी की लड़कियॉ भी आई हुई थीं। बच्चों की देखभाल करना एक तरह से उनके डिप्लोम के लिए प्रैक्टिकल की तरह था। भारत सोवियत मित्रता की वजह से हमारा हर जगह बड़ा सम्मान होता था। यही वजह थी कि मास्को आए पाकिस्तानी

.श्रीलंकन यहॉ तक कि नेपाली भी अपने को इन्डियन ही कहते थे।इस लागर मे मैने वही बहुचर्चित गाना आवारा हूँ गाया।गाते समय मेरी नजर एक बड़े ही सुन्दर और सौम्य लड़की पर पड़ी.जो बड़ी तन्मयता से मेरा गाना सुन रही थी।गाने के बाद मैने उसे मिनटों तक तालियॉ बजाते भी देखा।उसकी नजरें मुझ पर टिकी रहीं।जब तक प्रोग्राम चलता रहा.वो रह रहकर मुझे देख लेती थी और हल्के से मुस्करा देती थी।अपने संकोच की वजह से मै उसके समीप न जा पाया।प्रोग्राम के बाद खाने पीने और नाचने का भी इन्तजाम था.जिसकी हलचल मे वो पता नही कहॉ गुम हो गई ।अचानक मैने उसे एक मैक्सिन लड़के के साथ सटकर नाचते देखा।देर अभी भी नही हुई थी.पर उसके समीप जाने की हिम्मत मै न जुटा सका और वो स्वयम मेरे समीप न आई।डोन्ट एप्रोच वी एप्रोच्ड की इन्डियन थ्योरी की वजह से मै इस लड़की से उसका नाम तक न पूछ सका।मै उससे बेहद निराश था।इतना भरोसा हमे अपने ऑखो के आमंत्रणों पर होता है.जिसे नज़रअन्दाज करके वो लड़की एक गैर के साथ नाचे जा रही थी।

बहरहाल मैने उसे खो दिया।एक दूसरी लड़की स्वयम मेरे पास आई.जिसे नाच गानो से उतनी ही चिढ थी जितनी मुझे।मै उसके साथ छोटे बच्चों के लागर देखने चल पड़ा।उसका पूरा नाम लारीसा गोडोरोजा था।वो मल्दाविया के ही एक यूनि.मे कॉमर्स पढती थी.और उसकी पढाई करीब करीब पूरी हो चली थी।उसकी देखरेख मे बीस बच्चे थे.जो सात से दस वर्ष के थे।ये सब एक लम्बे से बैरक मे रहते थे।इनकी पूरी जिम्मेवारी लारीसा पर ही थी।इन्हे समय से जगाना.नहलाना धुलाना.खिलाना पिलाना.घूमाना फिराना सब कुछ उसी के हॉथो मे था।शाम मे वो घन्टो इन्हे कहानियॉ सुनाती थी या फिर किसी गाने की समवेत रिहर्सल करती थी।इस बैरक से लगा एक छोटा सा कमरा था.जो उसका था।कमरा साधारण सा था.जिसमे एक बेड.एक टेबल और एक कुर्सी थी।टेबल पर सैकड़ों किताबें बिखरी पड़ी थी और कुर्सी लारीसा के कपड़ों से लदी पड़ी थी।उसी ने मुझे अपने साफ धूले बिस्तर पर बैठने को कहा।एक कुंवारी अन्जान लड़की के बिस्तर पर बैठने का आमंत्रण मेरे आगामी जीवन के कई अन्यान्य आमंत्रणो पर आज तक हावी है।मै आधे घन्टे उसके कमरे मे रहा और उसे अपने मास्को की तंगियों के बारे मे बताता रहा।इस संक्षिप्त मुलाकात के बाद हम दो बार और मिले।एक बार मै स्वयम उससे मिलने गया और दूसरी बार वो मुझसे मिलने हमारे लागर तक आई।धीरे धीरे हमारी छुट्टियॉ समाप्त होने को आई।

मास्को मे उसके पत्र अनवरत आते रहे।महीने मे दो बार मुझे प्लाइवुड के बक्से मे सेब.नासपाती.अखरोट.प्रिजर्व्ड मीट.भूनी हुई मछलियॉ टमाटर.खीरे .तरह तरह की मौसमी सब्जियॉ यहॉ तक कि हरी मिर्च तक मिलते रहे।पते पर की लिखावट बहुत कम ही लारीसा की होती थी।ये लिखावट ज्यादेतर उसकी मॉ या छोटी बहन की होती थी।लारीसा सिर्फ छुट्टियों मे ही अपने गॉव जा पाती थी।मै उसके गॉव कभी नही जा पाया.गोकि उसके हर पत्र मे मुझे उसके माता पिता के निमंत्रण मिलते थे।लारीसा के बातचीत या उसके पत्रो से मुझे ये आभास हो चला था कि उसके माता पिता काफी समृद्ध हैं।कभीं कभार मै भी उन्हे विरयोसका से कोई छोटी मोटी चीजें खरीद कर भेज दिया करता था।लारीसा से मेरे और नीना के सम्बन्ध छुपे न थे।उसने अपने एक पत्र मे लिखा भी था ः मुझे तुम्हारे व नीना के सम्बन्ध मे कोई रूचि नही है.और न मै तुम्हारे जीवन मे नीना की जगह ही लेना चाहती हूँ।हर के पास एक साथ कई सम्बन्धो को पालने या सहेजने की जगह होती है.बस तुममे थोड़ा साहस और सिर्फ सच्चाई होनी चाहिये।कभीं कभीं एक ही आयाम और दिशा के सम्बन्ध इन्सान को उहापोह मे डाल देते है.लेकिन मै तुम्हे किसी भी उहापोह मे न डालूँगी।

नीना की जगह तो लारीसा न ले पाई.पर वो मेरी एक अन्तरंग मीता बनकर आज तक आए दिन मेरे कोर नम करती रहती है।

मुझे क्रिसमस पर लारीसा का एक विशेष उपहार आता था.जिसमे पहनने के ऊनी कपड़े होते थे।लारीसा को पत्र लिखना या उससे मिलना या उससे बातें करना मेरे लिये एक जैसा ही बनता जा रहा था।मैने उससे कभी कुछ भी नही छुपाया।उससे मैने कभीं कोई झूठ भी न बोला.जो मेरे व्यक्तित्व का सबसे सबल पक्ष था।मै अक्सर नीना से लारीसा के बारे मे बातें करता था और वो भी बिना किसी प्रतिक्रिया के घन्टों मुझसे लारीसा के बारे मे सुनती रहती थी।कभीं कभीं तो मै नीना से उसका हाल चाल तक पूछना भूल जाता था।लारीसा का हर पत्र मै नीना को पढने के लिए देता था।

नीना का जन्मदिन इकतीस दिसम्बर को था।उसका जन्मदिन और सिलवेस्टर मै बड़ी धूम धाम से मनाता था।सारा इन्तजाम मेरे रूम पार्टनर सिरयोजा के हॉथो मे होता था।खाने पीने का भर पूर इन्तजाम रहता था।एक बार लारीसा भी हमारे साथ थी।वो दो दिनो के लिये मास्को आई थी।नीना को गले से लगाकर उसने उसे उपहार भी दिया।मै उसे अपने साथ नही ठहरा सकता था।वो नीना के साथ उसके हॉस्टल मे रही।दोपहर के दो बजे से लेकर दूसरे दिन के सुबह तक धूम धमाका मचा।

उसे स्टेशन छोड़ने मै नीना के साथ गया था।विदाई पर वो मुझसे गले लगकर मिली और मिनटों तक मुझे अपने से चिपकाये रखी।नीना ने इसे सहज ही लिया।लारीसा से ये मेरी आखिरी मुलाकात थी।नीना के होते हुए भी मुझे लारीसा की वापसी कई दिनो तक खलती रही।नीना का जन्मदिन भी मै बस तीन बार मना सका।आलवीना के परिवार मे आने के बाद मेरे नीना से सम्बन्ध न रहे.पर लारीसा को मै सदा पत्र लिखता रहा और मुझे भी अपने अन्तिम दिन तक लारीसा के पत्र व उसके पार्सल मिलते रहे।उसने न तो इस नए सम्बन्ध पर अपनी उँगली उठाई और न तो मेरे और नीना के सम्बन्ध विच्छेद पर ही अपनी कोई प्रतिक्रिया भेजी।

मै अक्सर अपने पत्रो मे लारीसा को उसकी शादी या दूसरे सम्बन्धों के बारे मे कुरेदता रहता था।मेरे ऐसे प्रश्नो के प्रति वो सदा उदासीन सी बनी रहती थी।एक समृद्ध घर की लड़की.अच्छी सी नौकरी और एक हद तक आकर्षक लड़की के सामने ऐसी कौन सी अड़चन थी.ये मेरे लिए रहस्य ही बना रहा।वो अपने मॉ बाप की बड़ी लाड़ली बेटी थी।उसके मॉ बाप तो उस पर अपनी जान ही छिड़कते थे।लारीसा के पत्रो मे अपने मॉ बाप.अपनी छोटी बहन के अलावे उसकी एक शादीसुदा सहेली व उसके तीन बच्चों का अक्सर जिक्र रहता था।कई मॉ बाप अपने लड़कों के साथ शादी का प्रस्ताव लेकर उसके गॉव भी आए.पर लारीसा सारे रिश्ते ठुकराती रही।अविवाहित रहने का उसने जैसे एक अडिग निर्णय ही ले लिया था।उसके मॉ बाप ने भी उस पर दवाव डालना बन्द कर दिया।उसने अपने एक पत्र मे मुझे लिखा भी था

ःमेरी अपेक्षाओं मे शादी व्याह की कोई जगह नही है प्रमोद।

छुट्टियों मे वो नियमित रूप से अपने गॉव जाती थी।समय के साथ उसकी छोटी बहन की शादी हो गई।उसका पति घर जॅवाई बन कर अपने ससुर के साथ उनके कामो मे हॉथ बॅटाने लग पड़ा।अब इनके दो बच्चों मे लारीसा ने अपनी एक नई दुनिया ढूँढ ली थी।उसके पत्र मुझे आज तक मिलते रहते हैं।मै अक्सर सोचा करता था.कहॉ से लारीसा अपनी जीवन शक्ति बटोरती है!क्या उसे इस जीवन से बॉध रखा है!

तभी मुझे उसका एक पत्र बर्लिन मे मिला।उसे मै अविकल यहॉ अनुवादित कर दे रहा हूँः.

दरोगोई प्रमोद

प्रियवत

कैसे हो!तुम्हारा एक प्रश्न हमेशा मेरी तरफ से अनुत्तरित रहा।मेरा अकेलापन तुम्हे सदा परेशान करता रहा।मै अकेली नही हूँ।शायद मै तुम्हे इस पत्र से निराश करने जा रही हूँ।मै अपनी एक सहेली के साथ रहती हूँ।घर के बाहर हम एक दूसरे के लिए बस सहेलियॉ हैं.पर घर के अन्दर हमारे एक दूसरे से सम्बन्ध पति पत्नी जैसा है।मै लैस्बियन हूँ।इसे कोई भी स्वीकारना नही चाहता.लेकिन मै खुश हूँ।मेरी सहेली एक बड़ी सधी सर्जन है।ब्रेन सर्जरी मे उसका स्पेशलाइजेसन है।वो एक यूनिवर्सिटी क्लिनिक मे काम करती है।उसका नाम तमारा है।हम एक दूसरे से बेहद प्यार करते हैं।तमारा के घर वालों को हमारे सम्बन्धों के बारे मे पता है।मेरे घर वाले ऐसे सम्बन्धों के प्रति थोड़े संकीर्ण हैं.इसीलिए मै अब तक उन्हे कुछ बता न पाई।तुमसे मैने अपना कभीं कुछ न छुपाया और तुम्हे मै हमेशा एक अच्छे दोस्त की तरह ली और आज भी लेती हूँ।तुम्हारे बारे मे मै अक्सर तमारा से बाते करती हूँ।पता नही इस जीवन मे तुमसे मुलाकात हो सकेगी या नही!

तुम्हे मुझ पर विश्वास है.ये मेरा मन कहता है।इसी वजह से ये सब मै तुमसे कहने जा रही हूँः

मेरी अपनी कोख से कोई बच्चा सम्भव नही है.ये तुम देख रहे हो।ये भी अक्सर तुम्हारा विषय रहता था.पर मुझे दुनिया के सारे बच्चे अपने कोख से जन्मे लगते हैं।मै उनके बीच कोई अन्तर न कर पाती हूँ न देख पाती हूँ।मेरे और तमारा मे एक तरह से यही एक साम्यता है.जो हमे एक दूसरे के करीव लाया।विशेष सब ठीक ठाक है।घर के दूसरे सभी लोग मजे मे हैं।तमारा इस वक्त ठीक मेरे सामने बैठी कुछ पढ रही है।उसकी तरफ से भी तुम्हे प्रियवत।अपना हाल चाल देते रहना।

लारीसा और तमारा के सम्बन्ध मे मै कई दिनो तक उलझा रहा।ये मेरे लिए एक नई बात थी।फिर सोचा अगर लारीसा इस सम्बन्ध से खुश है तो मेरे लिए ऐसे सम्बन्धो को स्वीकारने या नकारने का प्रश्न उठता ही कहॉ है!मैने इसे सहज स्वीकार कर लिया.क्योकि मै अपने जीवन मे लारीसा की बलि नही चढा सकता था।

मास्को छोड़ने के बाद जब भी मै अपने अतीत की तरफ लौटता हूँ.घन्टो मुझे लारीसा के पास ठहरना पड़ जाता है।बिना किसी स्पर्श के वो मुझमे समा सी गई है।

जहॉ तक मेरे और लारीसा के सम्बन्धों का प्रश्न है.उसे मै आज तक परिभाषित नही कर पाया और न उसे कोई नाम ही दे पाया.पर वो हर एकाकी क्षण मे मेरे साथ होती है।मै उसे सम्वोधित करके न जाने कहॉ कहॉ की बातें करने लग पड़ता हूँ।

उसने भी मुझे एक बार कुछ ऐसा ही लिखा था।

प्रमोद कुमार सिंह